1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मन्त्राश्रुत्यं चरामसि। सामवेद 176
हम वेद मन्त्रा के अनुसार आचरण करें।
We should behave & Perform in accord with the advice of Vedic hymns.

वर्ष 38, अंक 37 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 जुलाई, 2015 से रविवार 2 अगस्त, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

भारत रत्न पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को विनम्र श्रद्धांजलि

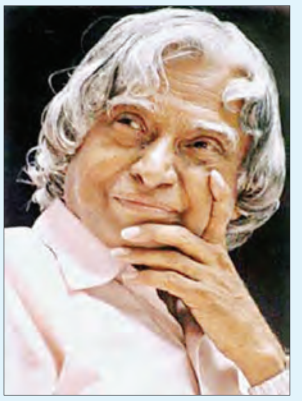

चमत्कारिक प्रतिभा के धनी डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भारत के एक मात्र ऐसे पहले वैज्ञानिक थे जिन्होंने देश के राष्ट्रपति पद को भी सुशोभित किया(11वें राष्ट्रपति 2002से 2007 तक)। आप देश की ऐसी विभूति थे जिन्हें राष्ट्रपति बनने से पूर्व देश के सवाच्च सम्मान ''भारत रत्न'' से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही साथ वे देश के इकलौते ऐसे राष्ट्रपति थे, जिन्होंने आजन्म अविवाहित रहकर देश की सेवा का व्रत लिया था।

डॉ. अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तामिलनाडु के रामेश्वरम् कस्बे के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था आपके पिता स्व. श्री जैनुल आब्दीन एक नाविक थे।

विधि के विधान एवं प्रभु इच्छा के सम्मुख सबको नतमस्तक होना ही पड़ता है। वे अंतिम श्वांस तक सक्रिय रहे हैं। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दे तथा समस्त परिवारीजनों एवं शोक संतप्त देशवासियों को यह स्थायी विछोह सहन करने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति शोक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। -सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आस्ट्रेलिया 2015

दिनांक 27, 28, तथा 29 नवम्बर 2015

यात्रा विवरण

आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के तत्त्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय अर्य महासम्मेलन 27,28 तथा 29 नवम्बर 2015 को आस्ट्रेलिया के सिडनी शहर में सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये अनेक देशों के प्रतिनिधि सिडनी पहुंचेंगे। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजनों के पहुंचने की सम्भावना है।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेंगे। सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही आर्य प्रतिनिधि सभा, आस्ट्रेलिया द्वारा प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था की जायेगी।

अनेकों आर्यजन इस अवसर पर आस्ट्रेलिया के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों का भी भ्रमण करना चाहते हैं, इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए आस्ट्रेलिया के अत्यन्त रमणीय एवं महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है। दोनों यात्राओं की जानकारी निम्न प्रकार है-

यात्रा नं. 1.
भव्य अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन यात्रा (6 रात्रि 7 दिन)
दिनांक 24 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2015 तक

प्रस्थान : दिनांक 24 नवम्बर 2015 को दोपहर 13.15 बजे दिल्ली से सिडनी के लिये
वापसी : दिनांक 01 दिसम्बर 2015 भारत के लिए वापसी सुबह 09:45 बजे सिडनी से

...शेष पेज 3 पर

पंजाब की घटना 80 के दशक के आतंक की आहट तो नहीं?

खतरनाक भविष्य के संकेत : तैयारी आज ही करनी होगी

हमने आर्य संदश के पिछले अंक में दिया था कि किस प्रकार पाकिस्तान पंजाब में नशे के कारोबार के साथ पुन: आतंक की फसल के बीज युवाओं के भीतर रोप रहा है। गुरुदासपुर हमला कहीं 80 के दशक के आतंक की फिर से नयी शुरुआत तो नहीं? दरअसल पाक सेना ने जियाहुल हक के जमाने से ही ये तय कर लिया था कि भारत को हजार घाव देने हैं, उसे रक्तरंजित करना है। इसी नीति को आगे बढाते हुये उसने पंजाब में खालिस्तानी विचार धारा को खड़ा किया और अपने यहां उन्हें संरक्षण, पैसा और प्रशिक्षण भी दिया गया, पाकिस्तान और खालिस्तान की इस उग्रवादी राजनीति की मंशा को समझने के लिए पंजाब के लोगों को भारी कीमत बलिदान देकर चुकानी पड़ी थी। पंजाब में फिर से तीन आतंकवादियों का घुसना फिर से किसी बड़ी आतंकी आहट का संकेत तो नहीं? आज सरकार को, जनता को और खुफिया एजेन्सियों को इस घटना को छोटी-मोटी घटना मानकर नजर अंदाज़ नहीं करना चाहिए कहीं ये घटना 80 के दशक के आतंकवाद के परिणामों की पुनरावृत्ति तो नहीं, यदि ऐसा है तो राज्य सरकार और केन्द्र सरकार को इस मामले की तह तक जाना आवश्यक होगा।

आज पंजाब पहले की तरह भारत का एक खुशहाल राज्य है पर कहीं इस हमले से ये तो साबित नहीं होता कि खालिस्तानी समूह और इस्लामिक आतंक आपस में तालमेल बना बैठे हों! जो आने वाले समय में देश और पंजाब के लिये खतरनाक होगा।

....हमारे देश की सबसे बड़ी समस्या यह है कि सरकार जब तक आतंकवाद पर कोई कड़ा कानून या लगाम लगाने के लिये प्रतिबद्ध नहीं होगी तब तक पाकिस्तान प्रायोजित आंतक को अपनी नीति बदलने की जरूरत नहीं होगी और जब-जब सरकार कानून बनाने को कदम उठाती है तब-तब कुछ राष्ट्रद्रोही वोट बैंक की सेना लेकर देश के संविधान को चुनौती देने निकल पड़ते हैं....

भारत का मजबूत कंधा कहे जाने वाले पंजाब पर जिस तरीके से ये कायरतापूर्ण हमला हुआ थाने में घुसकर अंधाधुंध गोलियां बरसाई गयीं ये मजहबी पागलपन सिवाय पाकिस्तान के कहीं और पोषित नहीं हो सकता। अभी जब सारे तथ्य सामने आयेंगे तब वो (पाकिस्तान) इस घटना से पल्ला झाड़कर कह देगा कि आपराधिक तत्वों पर उसका कोई बस नहीं है और खुद आतंक से पीड़ित होने की दुहाई देगा; जबकि सत्य सब जानते हैं कि ये हत्यारे पाक के मदरसों में पलते हैं, हमारे देश की सबसे बड़ी समस्या यह है कि सरकार जब तक आतंकवाद पर कोई कड़ा कानून या लगाम लगाने के लिये प्रतिबद्ध नहीं होगी तब तक पाकिस्तान प्रायोजित आंतक को अपनी नीति बदलने की जरूरत नहीं होगी और जब-जब सरकार कानून बनाने को कदम उठाती है तब-तब कुछ राष्ट्रद्रोही वोट बैंक की सेना लेकर देश के संविधान को चुनौती देने निकल पड़ते हैं इस परिस्थिति से निपटने के लिये मोदी जी को कुछ हल ढूंढना आवश्यक होगा, क्योंकि आज देश मोदी जी के साथ खड़ा है , मोदी जी को चाहिये कि पहले अपने देश में पल रहे नागों के फन कुचलें जो इनकी वैचारिक रूप से मदद कर इस मजहबी, खालिस्तानी विचार धारा को मजबूत करते हैं। क्या ये अपरोक्ष रूप से आतंक के साथ नहीं हैं? याकूब मेमन की फांसी के खिलाफ ही 40 लोग राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंपने निकल पड़े क्या इन लोगों की भारत के संविधान में आस्था नहीं? भारत सरकार को चाहिये परोक्ष या अपरोक्ष रूप से जो भी आतंक के प्रति सहानुभूति रखे या आतंकवाद की पैरवी करे उन पर और जो आज आतंकी के साथ हैं उन पर भी राष्ट्रद्रोह का मुकदमा दायर करें और वो ही सजा मुकर्रर करें जो एक अपराधी, आतंकी के लिये होती है। आज पंजाब को घाव दिया जिसके दर्द का हमें अहसास हुआ हमारी संवेदना उन परिवारों के प्रति जिन्होंने इस हमले में अपने परिवार के लोगों को खोया है हमारी तरफ से शहीद हुए जवानों को अश्रुपूर्ण नेत्रों से पुष्पांजलि है।

-राजीव चौधरी

हे वरुण! हमें आत्म–साम्राज्य–स्वराज्य प्रदान करो

नि षसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्या३स्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः।। –ऋ. 1/25/10
ऋषिः– **आजीगर्तिः शुनः शेपः**।। देवता–**वरुणः**।। छन्दः–**गायत्री**।।

शब्दार्थ– वरुणः– वरुण **धृतव्रतः**– अटल व्रतों के धारणकर्त्ता और **सुक्रतुः**– सदा शोभन कर्म ही करने वाले होकर **साम्राज्यायः**– साम्राज्य के लिए **पस्त्यासु आ**– प्रजाओं के अन्दर आकर **निषसाद**– बैठा हुआ है।

विनयः– वरुण सम्राट् हम प्रजाओं के अन्दर आकर बैठा हुआ है। यह कितनी विचित्र बात लगती है! परन्तु यह उतनी ही सच्ची है। वास्तविक साम्राज्य अन्दर ही है। बाहर भी सच्चा सम्राट् वही हो सकता है जिसने पहले अपनी प्रजाओं के हृदयों में सिंहासन प्राप्त कर लिया है। प्रजाओं के हृदयों में घुसे बिना कोई सच्चा सम्राट् नहीं बन सकता। ठीक–ठीक सच्चा शासन अन्दर घुसकर ही किया जा सकता है। इसीलिए सब ब्रह्माण्ड के एकमात्र अखंड सम्राट् जो वरुण देव हैं, वे हम प्रजाओं के अन्दर आकर बैठे हुए हैं। उस वास्तविक सम्राट् के दर्शन के लिए यदि हम निकलें तो हमें बाहरी सम्राटों के पास पहुंचने के समान, उसके पास पहुंचने के लिए कहीं बाहर नहीं फिरना होगा। वे तो स्वयं हमारे अन्दर आकर बैठे हुए हैं और इसलिए आकर बैठे हैं कि हमें साम्राज्य दे दें– 'साम्राज्याय'। परन्तु हम ऐसे मूर्ख हैं कि हमें कुछ खबर ही नहीं है! हम छोटी–छोटी बातों पर हुकूमत पाने के लिए–राज्य पाने के लिए बाहर घूमते–फिरते हैं, लड़ते–झगड़ते, सत्यादि नियमों को भंग करते, मार–काट करते फिरते है, परंतु यह नहीं जानते कि सर्वश्रेष्ठ (वरुण) राजा तो स्वयं हमें सारे संसार का सम्राट् बनाने के लिए, विश्व का साम्राज्य देने के लिए अन्दर आकर बैठा हुआ है और प्रतीक्षा कर रहा है किन्तु हम उधर देखते ही नहीं।

जो उधर देखते हैं वे देखते हैं कि वे वरु प्रभु 'धृतव्रत' हैं– वे व्रतों को धारे हुए हैं, उनके व्रत अटल हैं, उनके नियम कभी टूट नहीं सकते और वे ''सुक्रतु'' हैं-शोभन कर्म ही करने वाले हैं, उनसे कभी बुरा कर्म हो ही नहीं सकता। हम भी यदि सत्य नियमों का कभी भंग न करने वाले और सदा शोभन कर्म करने वाले हो जाएंगे तो उसी क्षण हमें वह सच्चा साम्राज्य मिल जाएगा। वे महात्मा उस साम्राज्य को भोग रहे हैं जिनके लिए सत्य व्रतों का उल्लंघन और बुरा काम होना असम्भव हो गया है। यह वह साम्राज्य है जिसके प्रथम दर्शन होने पर सब कालों और सब देशों के इस महापद को प्राप्त महापुरुष चिल्ला उठते हैं– ''मुझे जो पाना था वह पा लिया, मैं सम्राट् हो गया'' मैं तो अमृत हूं।

-आचार्य अभय देव साभारः वैदिक विनय

वैदिक विनय

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

- विजय आर्य

मो. 09540040339

सम्पादकीय

आखिर दया याचिका का औचित्य क्या था?

12 मार्च 1993 रोजाना की तरह ही भारत की आर्थिक राजधानी कहे जाने वाला मुम्बई शहर अपनी दुनिया में व्यस्त था। लोग अपने कामकाज में लगे थे। माएं अपने बच्चों के लिये खाना बना रही थी, बेंको में बाबूओं को ग्राहक जल्दी–जल्दी कहकर काम निपटवाने में लगे थे। कभी फिर मध्याह्न भोजन का अवकाश हो जाये, होटलों से लेकर रेलवे स्टेशन तक हर एक जगह जीवन अपनी दुनिया में मस्त था पर अचानक यह हंसता–खेलता शहर चीख–पुकार में बदल गया, चारों तरफ बम धमाकों से मुम्बई दहल उठी। लोग समझ नहीं पा रहे थे कि अपनों की लाशें उठायें या खुद को बचायें। बैंक हो या रेलवे स्टेशन, स्कूल, बस स्टैण्ड हर जगह धमाकों के साथ इंसानी चीखें सुनाई दे रही थीं। लगभग दो घंटे के अंतराल में करीब तेरह जगह बम धमाके हुए जिनमें करीब 265 लोग मौत की नींद सो गये और 800 के लगभग लोग घायल हो गये और लगभग 27 करोड़ की सम्पत्ति का नुकसान हुआ। ये सब सरकारी आंकड़े थे, यदि लोगों की बातों पर विश्वास किया जाये तो मृतकों और घायलो की संख्या इन आंकड़ों से कहीं अधिक थी। पुलिस जांच शुरु हुई और एक सम्प्रदाय विशेष के लोगों के साथ कुछ अपने भी शरीक पाये गये जिन्हें ये नहीं पता था कि आखिर माजरा क्या है! गिरफ्तार अभियुक्तों ने जो बताया वह समूची मानव जाति के कान खड़े करने वाला था कि हमने बाबरी मस्जिद विध्वंश का बदला लिया है। चलो मान लिया आवेश में आकर कुछ लोगों ने पत्थर के कुछ टुकड़े गिरा दिये पर तुमने तो इंसानियत को ही रौंद डाला, तुम तो धर्मान्धिता में बहकर समूची मानव जाति की नजरों में ही गिर गये! आखिर उन पत्थरों के टुकड़ों का बदला इन मांओं की ममता से क्यों? तुम्हें तनिक भी दया नही आई? और आज तुम कानून से अपने जीवन के लिए दया की भीख किस आधार पर मांग रहे हो? यदि तुम दया की भीख अपने परिवार का नाम लेकर मांग रहे हो तो यह भी सोचना कि वह तकरीबन 1000 घायल मृतक भी किसी न किसी परिवार का हिस्सा होंगे और देश की शान्ति सद्भावना को भंग करने वाले अपनी मजहबी मानसिकता के पोषण के लिये निर्दोष लोगों को मौत की नींद सुलाने वाले अपराधियों, आतंकवादियों पर दया भाव कैसा! अक्सर इन मामलों में भारतीय मीडिया और मानवाधिकार आयोग को मानवता याद आ जाती है जिस कारण इस बार खुद सुप्रीम कोर्ट ने सख्त रुख अपनाते हुये कहा- कि शहीदों के परिवारों के प्रति मानवाधिकार आयोग को कोई चिन्ता नहीं, शीर्ष अदालत ने ये भी सवाल उठाया कि आखिर मानवाधिकार आयोग उन लोगों के प्रति संवेदनयील क्यों नहीं होता जो भूख से दम तोड़ते हैं? क्या मानवाधिकार आयोग के पास आत्महत्या करने वाले किसानों शहीद होने वाले जवानों के परिवारों के लिये समय नहीं है? क्या मानवाधिकार आयोग सिर्फ अपराधियों और आतंकवादियों का पैरोकार बनकर रह गया है? याकूब मेनन को विशेष टाडा अदालत ने 2007 में फांसी की सजा सुनायी थी। सजा के खिलाफ याकूब की अपील हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट में खारिज हुई पिछले साल राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी भी याकूब की दया याचिका खरिज कर चुके हैं नौ अप्रैल को याकूब की पुनर्विचार याचिका खरिज होने के बाद महाराष्ट्र सरकार ने टाडा कोर्ट की इजाजत लेकर याकूब की फांसी पर काम करना शुरू कर दिया। बात एक याकूब की नहीं निठारी कांड के आरोपी सुरेन्द्र कोली समेत न जाने कितने दरिंदे दया याचिका लेकर बैठे हैं। आज इन्हें मानवाधिकार आयोग के साथ मिलकर दया चाहिये किन्तु निद्रोष और शहीद हुए जवानों के परिवारों के लिए भी मानव अधिकार होते हैं। इन्हें मानवता के ये दरिंदे क्यों भूल जाते हैं। यह एक विचारणीय प्रश्न है। इस विषय में महर्षि दयानन्द ने भी स्पष्ट कहा है ''यथोद्धरति निर्दाता कक्षं धान्यं च रक्षति। तथा रक्षेन्नृपो राष्ट्रं हन्याच्च परिपन्थिनः।।'' *(सत्यार्थ प्रकाश, श्लोक 9) अर्थात् जैसे धान से निकलने वाला छिलका धान्य की रक्षा करता है अर्थात् टूटने नहीं देता है वैसे ही राजा डाकू चोरों को मारे और राज्य की रक्षा करे।*

-संपादक

बोध कथा

कड़वे बोल न बोल रे भाई!

एक वकील की बात सुनाता हूं आपको। वकील साहब कभी–कभी सत्संग में जाते थे। उनका सात वर्ष का बच्चा भी साथ जाता था। वहां एक आदमी ने एक बार गाना गया, 'कड़वे बोल न बोल रे भाई!' एक दिन वकील साहब और उनकी धर्मपत्नी में हो गई अनबनः रूठ गये दोनों। कई दिन बीत गये। एक–दूसरे से बोले नहीं। परन्तु पति–पत्नी कब तक रूठे रहे। पति के मन में बार–बार आए कि वह मान जाए, पत्नी के मन में भी आये परन्तु दोनों की यह इच्छा कि पहल दूसरा करे। पति दफ्तर से आते, अपने कमरे में जाकर बैठे रहते। पत्नी खाना बनाकर नौकर के हाथ भेज देती। पहल होने में न आती। एक दिन वकील साहब दफ्तर से आए, अपने कमरे में चले गए। इनके नन्हे बच्चे ने इनके कमरे में आकर गाना शुरू किया– ''कड़वे बोल न बोल!''

वकील साहब के हृदय में एक आशा जग उठी। बच्चे से बोले–बेटा! यह गीत अपनी मां के कमरे में जाकर गा!

बच्चा मां के कमरे में गया। वहां जाकर गाने लगा– ''कड़वे बोल न बोल!''

मां ने कहा– ''यहां क्या गाता है? जा, अपने पिताजी के कमने में जाकर गा!''

बच्चा फिर पिताजी के कमरे में पहुंचा, बोला–''कड़वे बोल न बोल!''

पिताजी ने कहा– ''अरे! तुझे मां के कमरे में जाकर गाने को कहा था। वहीं जाकर गा!''

बच्चा फिर मां के कमरे में पहुंचा।

मां ने कहा अरे! तुझे पिता जी के कमरे में जाने के लिए कहा था। जा वहां जा कर गा।

बच्चे ने दोनों कमरों के बीच में जाकर कहा– ''तुम दोनों तो मुझे गाने नहीं देते। मैं अब यहां खड़ा होकर गाऊंगा।'' वह गाने लगा– ''कड़वे बोल न बोल रे भाई, कड़वे बोल न बोल!''

पिता और माता दोनों ने बच्चे की भोली बोली को सुना, दोनों हंस पड़े। हंसी के इस फब्बारे में क्रोध की दीवार टूट गई। दोनों बच्चे के पास आ गए, एक दूसरे की आंखों में देखकर हंसते हुए बोले ''कड़वे बोल न बोल।''

घर में मुस्कराहटें चमक उठीं, क्रोध के बादल टुकड़े–टुकड़े हो गए। रोशनी जग उठी।

यह है सत्संग का चमत्कार! जादू है जादू, यह सत्संग! एक छोटे से बच्चे को वह ऐसी शक्ति दे देता है कि बड़े–बड़े की भूल को सुधार दे, सन्नाटे को कहकहों में बदल दे।

तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजत चहुं ओर।
वशीकरण यह मंत्र है, तज दो वचन कठोर।।

पृष्ठ 1 का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य ...

-: कार्यक्रम :-

25 तथा 26 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(2 रात्रि)
27, 28 तथा 29 नवम्बर 2015	आर्य महासम्मेलन	(3 रात्रि)
30 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(1 रात्रि)
01 दिसम्बर 2015	भारत के लिये वापसी	

यात्रा व्यय रु. 1,40,000/- एक लाख चालीस हजार प्रति यात्री

सम्मेलन की रजिस्ट्रेशन फीस हेतु 100 आस्ट्रेलियन डालर प्रति यात्री, यात्रा से पूर्व अलग से नकद देने होंगे।

यात्रा नं. 2

भव्य आस्ट्रेलिया यात्रा (12 रात्रि 13 दिन) ● 24 नवम्बर से 07 दिसम्बर 2015 तक

प्रस्थान : दिनांक 24 नवम्बर 2015 को दोपहर 13.15 बजे दिल्ली से सिडनी के लिये

वापसी : दिनांक 07 दिसम्बर 2015 भारत के लिये वापसी सुबह 09:45 बजे मैलबर्न से

-: कार्यक्रम :-

25 तथा 26 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(2 रात्रि)
27, 28, तथा 29 नवम्बर 2015	आर्य महासम्मेलन	(3 रात्रि)
30 नवम्बर 2015	सिडनी भ्रमण	(1 रात्रि)
01 दिसम्बर से 04 दिसम्बर तक	गोल्ड कोस्ट भ्रमण	(4 रात्रि)
05 दिसम्बर से 06 दिसम्बर तक	मैलबर्न भ्रमण	(2 रात्रि)
07 दिसम्बर 2015 को	भारत के लिए वापसी	

यात्रा व्यय रु. 2,35,000/- दो लाख पैंतीस हजार प्रति यात्री

सम्मेलन की रजिस्ट्रेशन फीस हेतु 100 आस्ट्रेलियन डालर प्रति यात्री, यात्रा से पूर्व अलग से नकद देने होंगे।

उक्त दोनों यात्राओं की यात्रा-व्यय राशि में हवाई जहाज की सभी अंतर्राष्ट्रीय टिकटें तथा अंतर्देशीय टिकटें (दिल्ली से सिडनी, सिडनी से गोल्ड कोस्ट, गोल्डकोस्ट से मैलबर्न तथा मैलबर्न से भारत) वीजा, इन्श्योरेन्स (70 वर्ष तक की आयु के यात्रियों के लिये) सभी स्थानों पर आने-जाने की वाहन व्यवस्था, नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि के सभी खर्चे शामिल हैं। इसलिये निवेदन है कि यदि आप इस यात्रा में जाना चाहते हों तो कृपया इस पत्र के प्राप्त होते ही निम्नलिखित राशियां LE PASSAGE TO INDIA TOURS & TRAVELS PVT LTD **के नाम बैंक ड्राफ्ट बनवाकर (Payable At Ahmedabad) नीचे लिखे पते पर श्री अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य को भेजने का कष्ट करें।**

यात्रा नं. 1 के लिये रु. 80,000/- दिनांक 31 अगस्त 2015 से पूर्व

यात्रा नं. 2 के लिये रु. 1,40,000/' दिनांक 31 अगस्त 2015 से पूर्व

दोनों यात्राओं की शेष राशि 30 सितम्बर 2015 से पूर्व सभी यात्रियों को अवश्य भेज देनी है। सभी **बैंक ड्राफ्ट** LE PASSAGE TO INDIA TOURS & TRAVELS PVT LTD के नाम बनवाकर (Payable At Ahmedabad) निम्न पते पर भेज दें:-

अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य
यात्रा संयोजक - अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन -2015
12, रॉयल क्रीसैन्ट, थलतेज, अहमदाबाद-380059,
मो. 09824072509 निवास : 079-26858338
ई-मेल आई.डी. scba66@gmail.com

नोट : हमने केवल 30 सीटें यात्रा नं. 1 के लिये तथा 30 सीटें यात्रा नं. 2 के लिये आरक्षित कराई हैं। अत: जिन 30 यात्रियों के आवेदन-पत्र सबसे पहले प्राप्त होंगे उन्हें ही यात्रा में ले जाना सम्भव हो पायेगा। बाद में आने वाले आवेदन-पत्रों के यात्रियों को यात्रा-व्यय कुछ अधिक देना पड़ सकता है। हमने 5 रात्रि का न्यूजीलैण्ड भ्रमण का कार्यक्रम भी बनाया था किन्तु रु. 85,000/- प्रति यात्री का अतिरिक्त खर्च आने के कारण न्यूजीलैण्डका भ्रमण स्थगित किया है।

कुछ आवश्यक सूचनाएं

1. सभी यात्रियों को यात्रा की व्यय राशि के ड्राफ्ट के साथ पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ तथा अन्तिम दो पृष्ठों की जेरोक्स कॉपी अवश्य भेजनी है। संलग्न आवेदन पत्र पर सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों की अनुमति/स्वीकृति आवश्यक है। एडवांस राशि प्राप्त होने के बाद LE PASSAGE TO INDIA TOURS & TRAVELS PVT LTD द्वारा आपको वीजा सम्बन्धी तथा अन्य सभी सूचनाएं भेज दी जायेंगी।

2. सार्वदेशिक सभा द्वारा इस यात्रा हेतु 4 सदस्यों की एक समिति गठित की गई है जिसके संयोजक श्री अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य,उप प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हैं। अन्य सदस्य श्री प्रकाशजी आर्य- मंत्री, सार्वदेशिक सभा, श्री धर्मपालजी आर्य- प्रधान, दिल्ली सभा तथा श्री विनय आर्य- महामंत्री दिल्ली सभा हैं।

3. यात्रा खर्च में 70 वर्ष तक के यात्रियों का बीमा खर्च शामिल है। 70 वर्ष से अधिक आयु वाले यात्रियों को अतिरिक्त बीमा खर्च ट्रेवल कं. को देना होगा अथवा उन्हें अपना बीमा स्वयं कराना होगा।

4. यह यात्रा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त LE PASSAGE TO INDIA TOURS & TRAVELS PVT LTD द्वारा आयोजित की गई हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह यात्रा अत्यन्त सुखद, आरामदायक एवं रोमांचक रहेगी।

5. 2 वर्ष तक के बालकों (INFANT) को साथ में ले जाने पर रु. 25,000/- प्रति बालक अतिरिक्त देना होगा।

2 वर्ष से अधिक तथा 12 वर्ष तक की उम्र के बच्चों (CHILD) के लिये निम्न प्रकार अतिरिक्त राशि प्रति बच्चा देनी होगी-

बिस्तर के साथ कुल यात्रा व्यय का 80 % ● बिस्तर के बिना कुल यात्रा व्यय का 65 %

6. याद रहे कि इस यात्रा के लिए आपके पासपोर्ट की वैधता (Validity) 31 मई 2016 तक होनी आवश्यक है।

यात्रा कैन्सिल कराये जाने पर कैन्सीलेशन चार्जेज निम्न प्रकार लागू होंगे :-

कटौती	विवरण
1. कुछ नहीं	यात्रा की प्रस्थान तिथि से 71 वें दिन अथवा उससे पूर्व कैन्सिल कराने पर (यदि वीजा तब तक न मिला हो)
2. रु. 15,000/-	यात्रा की प्रस्थान तिथि से 71वें दिन अथवा उससे पूर्व कैन्सिल कराने पर (यदि वीजा मिल चुका हो तो)
3. रु. 20,000/-	यात्रा की प्रस्थान तिथि से 70 से 60 दिन के अन्दर कैन्सिल कराने पर
4. रु. 30,000/-	यात्रा की प्रस्थान तिथि से 59 से 31 दिन के अन्दर कैन्सिल कराने पर
5. रु. 100प्रतिशत	यात्रा की प्रस्थान तिथि से 30 से 01 दिन के अन्दर कैन्सिल कराने पर
6. रु. 20,000/-	यदि यात्री को वीजा नहीं मिलता है।

कृपया उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर ही आवेदन पत्र व राशि भेजें ताकि बाद में अकारण कोई विवाद न हो। यात्रा सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु आप मुझसे तथा निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं:

श्री अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य मो. 098240 72509

एक अद्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2015 तथा अविस्मरणीय अस्ट्रेलिया महाद्वीप की सुखद यात्रा की आशा और विश्वास के साथ

- प्रकाश आर्य, मो. 09826655117

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2015 हेतु आवेदन - पत्र

श्री अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य
यात्रा संयोजक-अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2015
12, रॉयल क्रीसैन्ट, थलतेज
अहमदाबाद-380059
मो. 098240 72509
निवास : 079-26858338

महोदय,

मैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2015 में भाग लेने जाना चाहता हूं/चाहती हूं। इस संबंध में आपके द्वारा प्रेषित जानकारी को मैंने अच्छी तरह पढ़ लिया है तथा उसमें दी गई सभी बातें मुझे स्वीकार हैं। मेरी अन्य जानकारी निम्न प्रकार है:

नाम :..........................पिता/पति का नाम :....................................
आयु :.......... जन्म दिनांक : ....व्यवसाय :..................
स्थाई पता :...
टेलीफोन व मोबाईल नम्बर : ....ई.मेल :..............................
मैं आर्य समाज : ....का/की सदस्य हूं।
मेरा पासपोर्ट :..................................तक के लिए वैध है।
मेरा पासपोर्ट नम्बर : ....है।

यात्रा नं. 1

मैं यात्रा नं. 1 में शामिल होना चाहता/चाहती हूं। मैं इस यात्रा की प्रथम किश्त की राशि रु. 80,000/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मुझे शीघ्र ही वीजा फार्म तथा अन्य जानकारी भेज दें।

यात्रा नं. 2

मैं यात्रा नं. 2 में शामिल होना चाहता/चाहती हूं। मैं इस यात्रा की प्रथम किश्त की राशि रु. 1,40,000/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मुझे शीघ्र ही वीजा फार्म तथा अन्य जानकारी भेज दें।

मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है।

आर्य समाज की अनुमति (रबर स्टाम्प के साथ) **भवदीय/भवदीया**

दिनांक : ______________

(आवेदक के हस्ताक्षर)

सम्पादक अजय सहगल जी को 60वें जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

दिनांक 31 जुलाई 1955 को पूर्ण रूप से आर्य समाज को समर्पित सहगल परिवार में एक दीप प्रज्ज्वलित हुआ। अजय के पिताजी आर्य वीर दल रावलपिण्डी के संचालक थे। विभाजन के उपरान्त 1949-50 में आर्य समाज बस्ती हरफूल सिंह, सदर बाजार, दिल्ली में आर्य समाज की स्थापना आपके पिता श्री रामनाथ सहगल जी के द्वारा हुई।

अजय जी की प्रवृत्ति जन्म से ही आर्य समाज की ओर थी। पंडित हरिशरण जी जोकि पहाड़गंज में रहते थे जिन्होंने कालान्तर में ऋग्वेद का भाष्य सरल भाषा में किया और दिल्ली की पूर्व महापौर श्रीमती शकुन्तला आर्या जी के बड़े देवर थे उनके द्वारा प्रथम वर्षगांठ, नामकरण एवं जन्म दिवस संस्कार सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में स्वामी आत्मानन्द जी महाराज भी उपस्थित थे। अजय जी की प्रारम्भिक शिक्षा दिल्ली पब्लिक स्कूल मथुरा रोड से प्रारम्भ हुई जोकि एक अंग्रेजी माध्यम स्कूल था। परिवार का हिन्दी परिपेक्ष्य होने के कारण वहां से कक्षा तीन के बाद दयानन्द मॉडल स्कूल मन्दिर मार्ग, दिल्ली में कक्षा पांच तक शिक्षा ग्रहण की, तदुपरान्त हरकोर्ट बटलर स्कूल, चित्रगुप्त रोड, पहाड़गंज से कक्षा 11 तक शिक्षा ग्रहण की तत्पश्चात् पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज से स्नातक की परीक्षा पास की। इसी दौरान वर्ष 1978 में आपका विवाह सम्पन्न हो गया और पुत्र अभिषेक का जन्म हुआ। चूंकि पिताजी एक व्यवसायी थे इसलिए वे अजय जी को अपने ही व्यवसाय में शामिल करना चाहते थे लेकिन अजय जी को व्यवसाय रास नहीं आया और पंजाब एण्ड सिंध बैंक में वर्ष 1979 में एक लिपिक के रूप में नौकरी करने लगे। 35 वर्ष की नौकरी के उपरान्त आप प्रबन्धक के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

अजय जी बाल्यकाल से ही आर्य समाज की गतिविधियों से जुड़े थे। आप जब कक्षा आठ में अध्ययनरत थे तभी श्री रामचन्द्र आर्य जी के संयोजन में गुड़गांव में आर्यवीर दल का शिविर आयोजित हुआ जिसमें आपने लाठी, व्यायाम आदि सीखे। इस शिविर में आपकी मुलाकात ब्र. श्यामराव जी (वर्तमान में स्वामी अग्निवेश जी) जोकि शिविर के मुख्य अतिथि थे से हुई। स्वामी जी उस समय आर्य समाज अनारकली में रहा करते थे और वहीं से राजधर्म पत्रिका का प्रकाशन होता था। अजय जी इस समय 8वीं में पढ़ते थे आपका विद्यालय आर्य समाज के नजदीक था इस कारण आप आर्य समाज अनारकली में ही रहने लगे। लेकिन आपकी माता जी को चिन्ता हुई कि कहीं उनका बेटा संन्यासी न बन जाए इसलिए उन्होंने अजय जी का आर्य समाज में जाना बन्द करवा दिया क्योंकि अजय जी अपनी मां के इकलौते पुत्र थे। समय की गति के साथ आपकी शिक्षा आगे बढ़ती गयी और शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थी परिषद से विद्यालय का चुनाव लड़ा लेकिन सफल न हो सके फिर भी आप विद्यार्थी आन्दोलन से जुड़े रहे। इसी दौरान केन्द्रीय युवक परिषद से भी आप जुड़ गये। कॉलेज के दिनों से ही डी.ए.वी. की गतिविधियों में लिप्त रहे और डी.ए.वी. स्कूल चित्रगुप्त रोड के मैदान में महात्मा हंसराज दिवस को धूमधाम से मनाया।

अजय जी की विशेषता थी कि बड़े-बड़े अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलनों जैसे आयोजनों में उन्हें जिस जिम्मेदारी को सौंपा गया उसे उन्होंने बखूबी पूरा किया इसलिए लोग आप पर पूर्ण विश्वास के साथ बड़ी से बड़ी जिम्मेदारी सौंप दिया करते हैं। दूसरी विशेषता अजय जी की यह रही है कि जिस काम को वे पूरा करने बैठते हैं तो तब तक नहीं उठते जब तक कि वह कार्य पूरा नहीं हो जाता।

आप वर्ष 1984 से टंकारा जन्म भूमि से जुड़े हैं। टंकारा समाचार का प्रारम्भ और इसकी प्रगति एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है। आपने लगभग 2000 बड़ी-छोटी पुस्तकों की एक लाईब्रेरी घर पर स्थापित की हुई है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आपको स्वस्थ जीवन और दीर्घायु प्रदान करने के साथ-साथ नई ऊर्जा से ओत-प्रोत करे, जिससे आप आर्य समाज एवं स्वामी दयानन्द जी के बताए मार्ग पर चलते हुए सेवा कार्य में संलग्न रहें।मैं समझता हूं कि अब 60 वर्ष की अवस्था में रिटायर होने के बाद उनका पूरा समय आर्य समाज की गतिविधियों को बढ़ाने में व्यतीत होगा तथा उनके अनुभव और संस्कारों से आर्य समाज को पर्याप्त ख्याति लाभ प्राप्त होगा।

-विनय आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की दिनांक 26 जुलाई 2015 को हुई अंतरंग सभा की बैठक में लिए गये प्रमुख निर्णय

1. पुरोहितों की नियुक्ति के लिए एक सभा एवं पुरोहित सभा के अधिकारियों के प्रतिनिधित्व में एक पैनल गठित किया जाएगा जो पुरोहितों की योग्यता व उनके प्रमाण पत्रों की जांच करके अपने पास सुरक्षित रखेगा जब किसी आर्य समाज को किसी पुरोहित की आवश्यकता होगी तो वह इस पैनल द्वारा अधिकृत पुरोहित की सेवाओं को प्राप्त कर सकेगा।
2. शिकायत निवारण समिति का गठन : आर्य समाजों में पुरोहितों की अथवा पुरोहितों के कार्य के सम्बन्ध में किसी प्रकार की समस्या, उनकी कार्य कुशलता या कार्य व्यवहार के प्रति कोई समस्या आती है तो उसके निवारण हेतु एक समिति का गठन किये जाने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया।
3. अफवाह निवारण हेतु एक स्थाई समिति का गठन किया जाएगा।
4. 14 अगस्त 2015 को डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी दिल्ली में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली की अनेक आर्य समाजों द्वारा संयुक्त रूप से सांयकाल देश भक्ति के भजनों की भव्य संध्या का आयोजन किया जाएगा।

वृक्ष लगाओ-ऋण चुकाओ कार्यक्रम का शुभारम्भ

आर्य समाज जिला कोटा एवं डी.ए.वी. स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में वृक्ष लगाओ-ऋण चुकाओ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राजस्थान प्रान्त के लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठारी ने डी.ए.वी. स्कूल तलवंडी में वृक्ष लगाकर वृक्षारोपण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। आर्य समाज जिला कोटा के प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढ़ा ने वृक्षारोपण करते हुए कहा कि आर्य समाज सदैव ही पर्यावरण के लिए सजग रहा है और यज्ञ के माध्यम से भी पर्यावरण शुद्धि हेतु लगातार कार्यरत है। स्कूल प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, सदस्य डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, ईको क्लब इंचार्ज डॉ. आर.पी. शर्मा ने आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया।

-श्रीमती सरिता रंजन गौतम, प्राचार्या

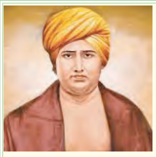

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के तत्वावधान में

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर

देश के अमर जवान शहीदों को समर्पित राष्ट्रभक्ति के भजनों से सराबोर

भव्य भजन संध्या

आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी, दिल्ली दिनांक 14 अगस्त 2015 सांय 4 बजे

सभी देश भक्त आर्यजन अपने परिवार व ईष्ट-मित्रों सहित उपस्थित हो भजनों का आनन्द प्राप्त करें

निवेदक :

धर्म पाल आर्य	विनय आर्य	विद्यामित्र ठुकराल	कीर्ति शर्मा	चन्द्र मोहन आर्य	वागीश शर्मा	आदर्श कुमार
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष	संयोजक	संयोजक	सह संयोजक	सह संयोजक

सहयोगी आर्य समाजें : आर्य समाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा, डोरीवालान, करोल बाग, प्रताप नगर, पुलबंगश, आर्यपुरा, केशवपुरम्, मुल्तान देव नगर।

वेद सर्वतः पूर्ण तथा सब ज्ञान और विज्ञान का दाता है

ईश्वरीय ज्ञान वेद नैसर्गिक रूप से सब प्रकार से पूर्ण है जोकि सब प्रकार के ज्ञान और विज्ञान बीज रूप से देता है। इसमें सब बातों का उपदेश परमात्मा ने मनुष्य मात्र के लाभ के लिये किया है जिसके द्वारा वे सब ज्ञयों और कर्त्तव्यों के जानकर इस संसार में सब प्रकार व्यक्तिगत तथा समूहिक रूप से सुखी रहें तथा मरणोपरान्त मुक्ति के आनन्द को प्राप्त कर सकें।

कात्यायन प्रणीत ऋग्वेद-सर्वानुकमणी में स्पष्ट लेख हैं-''यस्य वाक्यं स ऋषि:'' (2-4)। ''या तेनोच्यते सा देवता'' (2-5)।-'जिसका अभिप्राय यह है कि जिसके नाम से कोई वेद मन्त्र वेद संहिता में आया है उसे उस मन्त्र का ऋषि कहा जाता है तथा मन्त्र द्वारा जो प्रतिपाद्य विषय है उसको देवता कहते हैं।

यास्क विरचित निरुक्त (7-15) में कहा गया है ''देवों ...... दीपाद्व द्योतनाद्वा ....। यो देव: सा देवता।'' **जिसका अभिप्राय है कि जो प्रकाशमान् हो या प्रकाशक हो उसे देव या देवता कहते हैं। तदनुसार यह कहा जा सकता है** 'मन्त्रेण द्योत्यते इति देवता' अर्थात् **मन्त्र का प्रतिपाद्य विषय देवता कहलाता है।**

वेदों में बार-बार कहा गया है कि वैदिक व्यवहार के देवता या वेद प्रतिपादित भौतिक संसार के विषय तेतीस हैं:-

(1) ''ये त्रिशति त्रयस्परो देवास:'' (ऋग्वेद, 8-28-1) अर्थात् तेतीस मौलिक पदार्थ हैं।

(2) ''त्रयस्ति शतास्तुवत'' (यजुर्वेद,14-31) अर्थात् तेतीस कहने लायक या वर्णन योग्य मौलिक पदार्थ हैं।

(3) ''यस्य त्रयस्त्रिंशद् देवा अंगे गात्रा विभेजिरे। तान् वै त्रयस्त्रिंशद् देवाने के ब्रह्मविदों विदु:'' (अथर्ववेद,10-7-27) अर्थात् उस ब्रह्म में तेतीस देवों या मौलिक पदार्थो के घटक अवयव ठीक तरह विभक्त होकर विराजमान् है; उन तेतीस देवों को कोई कोई वेद-ज्ञाता जानते हैं।

शतपथ ब्राह्मण (14-5) के अनुसार ये तेतीस देवता निम्न प्रकार हैं- 8 वसु, 11 रुद्र, 12 आदित्य, इन्द्र और प्रजापति। आठ वसु आग्नेय महान् विभूतियाँ (अग्नि), पृथ्वी (सब ग्रह), वायु (वायु मंडलों के सातों वृत्त) अन्तरिक्ष, आदित्य (सूर्यों के गोलक), द्युलोक (द्यौ:,) चन्द्रमा (सब उपग्रह) और नक्षत्र हैं जिनमें जो स्थिरमान्, चलने वाले और जीवधारी हैं। उनका वास है। मनुष्य शरीर के अन्तर्गत दस घनार्जन-तथा ग्यारहवां मानवीय जीवात्मा (शरीर का स्वामी, सब जानने वाला तथा शरीर यन्त्र को चलाने हारा) शरीर से अन्त में निकलते समय लोगों को रुलाते हैं इसलिए रुद्र कहलाते हैं, पर वास्तव में ये शरीर को धारण करने और चलाने वाले हैं। साल के बारह महीनों के आदित्य (समय मापने वाले या मापक) इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे समय के द्योतक हैं तथा जीवों की आयु को मापते हैं। इन्द्र (सर्वव्याप्त तथा परमारथकर्तामान्) शक्ति या विद्युत् को कहते हैं जो सब गतियों तथा क्रिया-कलापों का कारण है। प्रजापति (सब प्राणियों को धारण करने वाला) यह अभिप्राय यज्ञ (कर्तव्य कर्म), दूध देने वाले पशु तथा भोजन और पान से है जिनके द्वारा सब प्राणियों का पालन और वर्द्धन होता है।

संश्लेषण और विश्लेषण दृष्टि से विचार करने से ये तेतीस देवता समय, स्थान, शक्ति, (मानवीय) आत्मा, विचार प्रेरित क्रिया-कलापों और जीवन धारक क्रिया-कलापों में विभक्त किये जा सकते हैं। आठ वसुओं को स्थान कहा जा सकता है। दस प्राण जीवन धारक क्रिया-कलापी कहे जा सकते हैं। आत्मा शरीर का स्वामी तथा सब कुछ शरीर के लिए करने वाला तथा वस्तुओं को जानने वाला है। ये ग्यारहों मिल कर रुद्र कहलाते हैं। बारह आदित्यों का बोधक या मापक या समय ही कहा जा सकता है। इन्द्र या विद्युत् को सर्वव्यापक या सबमें स्थित या ओतप्रोत शक्ति कहा जा सकता है। इन्द्र या विद्युत् को सर्वव्यापक या सबमें स्थित या ओप्रोत शक्ति कहा जा सकता है। प्रजापति को, जैसा कि कहा जा चुका है, एक तरह से विचार प्रेरित क्रिया-कलाप कहा जा सकता है जो प्राणियों के पोषणकारी भोजन और पान के द्वारा आत्मा की छत्रछाया में मन की प्रेरणा से होता है।

यह भी निर्विवाद सिद्ध है कि समय, स्थान, शक्ति, (मानवीय) आत्मा, विचार प्रेरित क्रिया-कलाप (यज्ञ) और जीवन धारक स्वयं चालित क्रिया-कलाप (जो पोषक पदार्थो तथा अन्त: और वहि: इन्द्रियों एवं आत्मा के योग से सिद्ध होते हैं) इन छ: में ही जितनी जानने लायक सान्सारिक वस्तुयें हैं सो सब अन्तर्गत हैं।

इस प्रकार नि:संकोच यह कहा जा सकता है कि वैदिक तेतीस देवता दुनियाँ की सब जानने योग्य वस्तुओं को सूचित करते हैं।

इसके अतिरिक्त देवों के देव परमात्मा (जिसकी ये सब विभूतियाँ हैं के विषय में भी वेद सविस्तार वर्णन करते हैं, जो अपने स्वाभाविक और अखण्डित नियमों के अनुसार सृष्टि रचना कर जीवों को सुकर्म करने तथा सुख ऐश्वर्य एवं मुक्ति का अवसर प्रदान करता है।

इस प्रकार ईश्वर, जीव और प्रकृति विषयक प्राय: समस्त बातें वेदों में कही गई हैं। शतपथ ब्राह्मण (14-5) यही कहता है तथा यजुर्वेद (14-31), अथर्ववेद (10-7-27) तथा अन्य वैदिक मन्त्र यही कहते हैं।

इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि वेद सर्वत: पूर्ण तथा सर्व ज्ञान और विज्ञान के विषय में समुचित तथा आवश्यक सूचनायें बीज रूप से देते हैं।

साभार - वेद और वेद-यज्ञ

आर्य समाज मॉडल बस्ती के मंत्री आदर्श कुमार जी को हार्दिक धन्यवाद

आर्य समाज डी.सी.एम. कॉलोनी के पुनरुद्धार में अपना विशेष योगदान देने वाले श्री आदर्श कुमार जी मंत्री आर्य समाज मॉडल बस्ती, दिल्ली-5 आर्य समाज डी.सी.एम. कॉलोनी जिसको एम.सी.डी. द्वारा अकस्मात तोड़े जाने पर पुन: जीवित करने के लिए न रात देखी-न दिन आपने निरंतर अपनी सेवाएं प्रदान की थीं, आपने अनेक कोशिशों के बाद टूटे हुए आर्य समाज मंदिर व यज्ञ शाला को बनवाने में सहयोग ही नहीं दिया अपितु नित्य शाम को अपने सहयोगियों के साथ यज्ञ कर रहे हैं व आजकल दिल्ली में हो रही भारी वर्षा के दिनों में भी जबकि वहां पानी का भरपूर भराव है ईंटों का एक चबूतरा बनाकर प्रतिदिन यज्ञ को जारी रखा हुआ है। जिसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की सभी आर्य समाजों की ओर से आपका हार्दिक धन्यवाद करती है।

-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को समर्पित
समूहगान प्रतियोगिता का प्रथम चरण सम्पन्न

28 जुलाई 2015 कृतज्ञ राष्ट्र के श्रेष्ठतम शिखर, महान वैज्ञानिक,प्रबुद्ध राजनीतिज्ञ, भारत के 11वें राष्ट्रपति, स्वदेशी के समर्थक जिनका मानना था ''भारत की सुरक्षा विदेशी हथियारों से नहीं बल्कि स्वदेशी तकनीक से बने हथियारों से होगी।'' सभी के प्रेरणा स्रोत सर्वप्रिय डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के निधन पर पूरा राष्ट्र शोकाकुल था वहीं आर्य विद्या परिषद् दिल्ली की ओर से उन्हीं के आदर्श वाक्य ''मेरे निधन पर कोई अवकाश घोषित न किया जाए बल्कि उस दिन सभी जगह काम अवश्य हो।'' को मानते हुए उन्हीं को समर्पित एक समूहगान प्रतियोगिता का आयोजन महाशय धर्मपाल विद्या मन्दिर, सुभाष नगर में किया गया। सभी उपस्थित जनों ने दो मिनट का मौन रखकर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी और उनके दिखाए मार्ग पर चलने का प्रण लिया।

इस प्रतियोगिता में दिल्ली के विभिन्न आर्य विद्यालयों के विद्यार्थियों ने वर्ग -1 में महर्षि दयानन्द जी को समर्पित, वर्ग-2 में देशभक्ति पर आधारित और वर्ग-3 में आर्य समाज से संबंधित गीत प्रस्तुत किए। प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय,तृतीय व सांत्वना पुरस्कार दिए गये। सभी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र व कॉमिक्स भी भेंट की गई।

इस अवसर पर श्री सोमनाथ ओबराय, श्री देवेन्द्र पाहवा, श्री गोविन्द राम अग्रवाल, श्रीमती शशि दुर्गा, श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती शकुन्तला तनेजा और विभिन्न विद्यालयों की अध्यापिकाएं उपस्थित रहीं। इस आयोजन की व्यवस्था महाशय धर्मपाल विद्या मन्दिर की ओर से की गई। सभी उपस्थित अतिथियों को विद्यालय की ओर से सुन्दर घड़ियां भेंट की गई और आर्य विद्या परिषद की ओर से सबका पटकों द्वारा स्वागत करके निणार्यक मण्डल को महर्षि दयानन्दजी अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' भेंट किया गया। प्रतियोगिता का दूसरा चरण 6 अगस्त 2015, स्थान :- आर्य समाज मंदिर, 15 हनुमान रोड, दिल्ली।

-श्रीमती सरोज आर्या

ग्रंथ परिचय सत्यार्थ प्रकाश

प्रश्न 1: महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थों में सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ कौन-सा है?
उत्तर: सत्यार्थ-प्रकाश।
प्रश्न 2: सत्यार्थ-प्रकाश सबसे अधिक प्रसिद्ध क्यों हुआ?
उत्तर: क्योंकि इस ग्रन्थ को पढ़ने से अज्ञान अन्धकार में भटक रहे असंख्य लोगों को ज्ञान का प्रकाश मिला। ज्ञान के इस दीपक के प्रकाश में कोई भी मनुष्य झूठे मत-मतान्तरों एवं पाखण्ड के गड्ढे में नहीं गिर सकता। उसके हाथ में सभी गुत्थियों और उलझनों को सुलझाने की चाबी प्राप्त हो जाती है।
प्रश्न 3 : इस ग्रन्थ की रचना में महर्षि का मुख्य प्रयोजन क्या था?
उत्तर: महर्षि दयानन्द के अपने ही शब्दों में, **''मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।''** ग्रन्थ का नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' (सत्य+अर्थ+प्रकाश) स्वयं ही इस प्रयोजन को स्पष्ट कर रहा है।
प्रश्न 4: महर्षि के अनुसार सत्य का अर्थ क्या है?
उत्तर: ''जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।'' वह सत्य नहीं कहता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय।
प्रश्न 5: इस ग्रन्थ में कितने अध्याय हैं?
उत्तर: इस ग्रन्थ में **चौदह अध्याय** अथवा विभाग हैं, जिन्हें '**समुल्लास**' का नाम दिया गया है। इनमें पहले दस समुल्लास पूर्वार्द्ध और अन्तिम चार समुल्लास उत्तरार्द्ध कहलाते हैं। अन्त में '**स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश**' है।'
प्रश्न 6: इसकी रचना कब की गई?
उत्तर: प्रथम संस्करण का आरम्भ आषाढ़बदी 13, संवत् 1931 (12 जून, सन्। 1874, शुक्रवार) के दिन हुआ और **समाप्ति विक्रमी संवत् 1931, आश्विन शुक्ला की प्रतिपदा, रविवार के दिन हुई।** द्वितीय संस्करण का समय भाद्रपद शुक्लपक्ष, विक्रमी संवत् 1939 है। महर्षि ने इसे महाराणा जी के उदयपुर में लिखा।
प्रश्न 7: पूर्वार्द्ध के दस समुल्लासों में किन-किन विषयों को लिया गया है?
उत्तर: पूर्वार्द्ध के दस समुल्लासों में भिन्न-भिन्न विषयों को लेकर महर्षि ने अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है। वे विषय क्रमशः निम्नलिखित हैं:-
1. **प्रथम** समुल्लास में ईश्वर के मुख्य नाम **ओ३म् के साथ सौ विभिन्न नामों की अर्थ सहित व्याख्या।**
2. **द्वितीय** समु. में **सन्तानों को शिक्षा प्रदान करने की विधि और महत्त्व।**
3. **तृतीय** समु. में **ब्रह्मचर्य, पठन व्यवस्था, सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने-पढ़ाने की रीति।**
4. **चतुर्थ** समु. में **विवाह और ग्रहाश्रम का व्यवहार।**
5. **पंचम** समु. में **वानप्रस्थ** और **संन्यास** आश्रम की विधि।
6. **छठे** समु. में **राजा, राजनीति** आदि विषयों को लेकर राजधर्म की व्याख्या।
7. **सप्तम** समु. में **वेद** और **ईश्वर** का विषय।
8. अष्टम समु. में **सृष्टि की उत्पति, स्थिति** और प्रलय का वर्णन।
9. **नवम** समु. में **विद्या, अविद्या, बन्ध** और **मोक्ष** की व्याख्या।
10. **दशम** समु. में **आचार, अनाचार, भक्ष्य** और अभक्ष्य विषयों की व्याख्या।

इस प्रकार ये **दसों समुल्लास मण्डनात्मक** हैं, जिनमें महर्षि ने सत्य सनातन वेद धर्म के अनुसार उपर्युक्त विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।
प्रश्न 8: उत्तरार्द्ध के चार समुल्लासों में किन-किन विषयों का प्रतिपादन है?
उत्तर: ये चार समुल्लास खण्डनात्मक हैं अर्थात् इनमें महर्षि ने अन्य मत-मतान्तरों की मिथ्या बातों का खंडन किया है। इन ग्यारह से चौदह समुल्लासों में जिन-जिन मतों के विषय में लिखा है, वे निम्नलिखित हैं:-
1. **ग्यारहवें** समुल्लास में **आर्यावर्त** अर्थात् **भारत में उस समय प्रचलित मत-मतान्तरों में मान्य मिथ्या बातों का खण्डन।**
2 **बारहवें** समु. में **चार्वाक, बौद्ध** और **जैन, इन नास्तिक मतों का खण्डन।**
3. **तेरहवें** समु. में **ईसाई मत का खण्डन।**
4. **चौदहवें** समु. में **मुसलमानों के मत का खण्डन।**
प्रश्न 9: महर्षि को दूसरे मतों का खण्डन करके उनका मन दुःखाने की क्या आवश्यकता थी? केवल अपने सत्य विचारों को ही प्रकट कर देते।
उत्तर: उस समय विभिन्न मत-मतान्तरों की बुराइयों से देश की जो दुर्दशा हो रही थी उससे महर्षि बहुत चिन्तित थे। वे इन बुराइयों को दूर कर देश व देशवासियों की दशा सुधारना चाहते थे, किसी का दिल दुःखाना नहीं। महर्षि के शब्दों में :-
''विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मुनष्यों के सामने वे सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।'' महर्षि आगे लिखते हैं :-
''मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है, परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रक्खी है और न किसी का मन दुःखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है। किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं।'' इस प्रकार मनुष्यों की उन्नति को लक्ष्य में रखकर उन्होंने असत्य बातों का खण्डन किया।
प्रश्न 10: इससे तो भिन्न-भिन्न मतों की बुराइयां जानकार आपस में मन-मुटाव और लड़ाई-झगड़े होंगे?
उत्तर: ऐसा नहीं है, महर्षि तो सभी मनुष्यों को एक ही धर्म का अनुयायी बनाकर प्रेमपूर्वक रखना चाहते थे। इसमें उनके दो उद्देश्य थे। उनके शब्दों में, ''इसमें यह अभिप्राय रखा गया है कि जो सब मतों में सत्य-सत्य बातें हैं, वे वे सब में अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो-जो मत-मतान्तरों में मिथ्या बातें हैं, उन-उन का खण्डन किया है। **इसमें यह भी अभिप्राय रखा है कि सब मत-मतान्तरों की गुप्त वा प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर विद्वान् अविद्वान् सब साधारण मनुष्यों के सामने रखा है, जिससे सबसे सबका विचार होकर परस्पर प्रेमी हो के एक सत्य मतस्थ होवें, इस प्रकार यदि सब परस्पर आचरण करें तो लड़ाई-झगड़े के स्थान पर प्रेम भाव की वृद्धि होगी।''**
प्रश्न 11: अन्त में प्रस्तुत 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' का क्या तात्पर्य है?
उत्तर : 'स्वमन्तव्यामन्तव्य' में महर्षि ने सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् **सार्वजनिक धर्म, जिसको सदा से सब मानते आये और मानेंगे भी, की परिभाषाएं प्रस्तुत की हैं।** इनको सनातन नित्य धर्म कहते हैं। वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त विद्वानों द्वारा जो ईश्वर आदि शास्त्र पदार्थ जैसे माने गये हैं, उनको महर्षि भी वैसा ही मानते थे उसी को लेकर उन्होंने इसमें प्रकाशित किया है। इसमें उन्होंने **'ईश्वर' से लेकर धर्म, अधर्म, स्वर्ग, नरक, जन्म, मृत्यु, सहित सगुणनिर्गुणस्तुति प्रार्थनोपसना' तक 51 पदार्थों के विषय में अपना सिद्धान्त (मन्तव्य) प्रकट किया है। कोई नवीन कल्पना या मत चलाने का उनका लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं था।**
साभार- महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

महर्षि दयानन्द ग्रंथ परिचय
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।
- विजय आर्य
मो. 09540040339

''शत हस्त समाहर सहस्र हस्त सं किर'' – सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर सभा को नेपाल भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ प्राप्त दान सूची

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को प्राप्त राशि
आर्य समाज, इन्दिरा नगर, लखनऊ द्वारा एकत्रित की गई दान राशि

300.	श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी	11,000/-
301.	डॉ. कर्नल अनिल आहूजा	2100/-
302.	श्रीमती महेश देवी	2000/-
303.	श्री लक्ष्मण प्रसाद आर्य	1500/-
304.	श्री दिलीप मंजू शंकर	1001/-
305.	डॉ. वेद प्रकाश	1000/-
306.	श्रीमती आनन्द कुमारी	1000/-
307.	श्रीमती कांति कुमार	1000/-
308.	श्रीमती सुशीला वार्ष्णेय	1000/-
309.	डॉ. पी.आर. गुप्ता(वरिष्ठ सर्जन)	1000/-
310.	श्री मूल चन्दर	1000/-
311.	श्री डोरी लाल राजपूत	1000/-
312.	श्रीमती मालती प्रेम कुमार	501/-
313.	श्री सत्य देव वानप्रस्थी	501/-
314.	श्री अभय पाल सिंह	500/-
315.	श्री नरसिंह पाल	500/-
316.	श्री सुरेन्द्र निगम	500/-
317.	श्री राम गुलाम शर्मा	500/-
318.	श्री गोपाल जी श्रीवास्तव	500/-
319.	श्रीमती सरिता श्रीवास्तव	500/-
320.	श्रीमती सविता श्रीवास्तव	500/-
321.	श्रीमती विमल श्रीवास्तव	500/-
322.	श्रीमती कुसुम सिंह	500/-
323.	श्री सदानन्द मनबासाराय	400/-
324.	डॉ. वेद प्रकाश	250/-
325.	श्री राम गोविन्द ठाकुर	200/-
326.	श्री सुरेन्द्र प्रताप आर्य	200/-
327.	श्री सत्येन्द्र जौहरी	200/-
328.	श्रीमती सुजाता मिश्रा	200/-
329.	श्री रमेश चन्द्र	100/-
330.	श्री चित्रा मोहन	100/-
331.	श्रीमती रेखा पाण्डेय	100/-

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य संदेश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। - मंत्री

आर्य समाज सागरपुर का वार्षिकोत्सव, श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार समारोह

आर्य समाज सागरपुर द्वारा गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी वार्षिकोत्सव, श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार समारोह का आयोजन दिनांक 5 से 9 अगस्त 2015 के मध्य किया जा रहा है। इस पुण्य अवसर पर आप सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाते हुए वेदोपदेश का श्रवण कर धर्म लाभ उठाएं।

श्रीमती विद्यावती आर्या, प्रधाना, मो. 09313869631 श्री मान्धाता सिंह आर्य, मंत्री, मो.09911697901

आर्य समाज राम नगर रुड़की के तत्त्वावधान में स्वास्तिक एवं शांति महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज राम नगर रुड़की ने देश हित पर बलिदान होने वाले वीर पं. राम प्रसाद बिस्मिल व महारानी लक्ष्मी बाई के जन्म दिवस पर स्वास्तिक एवं शांति महायज्ञ का आयोजन किया गया। महायज्ञ के मुख्य यजमान श्री तेज पाल सिंह आर्य व यज्ञ के ब्रह्मा श्री मदन पाल शर्मा थे। **-तेजपाल सिंह आर्य, उपाध्यक्ष**

आर्य समाज डालीगंज शताब्दी समारोह का आयोजन

दिनांक 18 से 20 सितम्बर 2015 को आर्य समाज डालीगंज शताब्दी समारोह समिति एवं आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्वावधान में आर्य समाज शताब्दी समारोह दिनांक 18 से 20 सितम्बर 2015 को छत्रपति शिवाजी सभागार, रामाधीन सिंह कॉलेज, आई. टी.चौराहा, लखनऊ में आयोजित होगा। जिसके अन्तर्गत वैदिक यज्ञ, वेद व विज्ञान सम्मेलन, महिला सम्मेलन तथा राष्ट्ररक्षा सम्मेलन एवं युवा स्वास्थ्य और योग सम्मेलन का आयोजन होगा। नोट : पुस्तक विक्रेतागण एवं सभागत सभी आर्य जनों के लिए आवास एवं भोजन की व्यवस्था है।

-सेवक राम आर्य, अधिष्ठाता

आर्य समाज डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-14 फरीदाबाद का 31 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल सैक्टर-14 फरीदाबाद ने अपनी आर्य समाज का 31वां वार्षिकोत्सव दिनांक11 जुलाई 2015 को मनाया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा के प्रधान श्री के.एल खुराना ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश जी ने उपस्थित होकर मानव जीवन में सदैव सदाचार व ईश्वर विश्वास का आश्रय लिए रहने की प्रेरणा दी। बिजनौर के श्री वेदरथी व श्री नरेश दत्त आर्य ने भजनामृत से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के अन्त में विद्यालय प्राचार्य श्री एस.एस. चौधरी ने समस्त बन्धुओं को महर्षि दयानन्द के वेद पथ पर चलने की प्रेरणा दी।

-हरिओम शास्त्री, मंत्री

आर्य समाज, अलवर के तत्त्वावधान में 68वां निःशुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर सम्पन्न

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर के तत्त्वावधान में 68वां निःशुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ अस्पताल में दिनांक 12 जुलाई 2015 को लगाया गया। मुख्य अतिथि श्री निरंजन लाल डाटा ने शिविर का विधिवत् उद्घाटन किया। लगभग 300 रोगियों ने मधुमेह, बी.पी., थायराइड, लिपिडप्रोफाइल, लिवर, किडनी, ई. सी.जी. इत्यादि की जांच कराई। शिविर में डॉ. देशबन्धु गुप्ता, डॉ. डी. सी.शर्मा, डॉ. ऋचा भार्गव, डॉ. बी. एल.सैनी ने अपनी निःशुल्क सेवाएं समर्पित कीं। श्रीमती सुरभी चन्द्रा ने पं. हेतराम आर्य सभागार में बन रही आर्ट गैलरी हेतु 51 हजार रु. व श्री निरंजन लाल डाटा ने 1 लाख रुपये दान दिये। इस अवसर पर सर्वश्री हरदयाल शर्मा, अशोक आर्य, छबीलदास पावा, कमला शर्मा, सुमन आर्य, दिविशा आर्य, ईश्वर देवी तथा राजगढ़ से खेमसिंह आर्य, नेक सिंह आर्य इत्यादि गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

-प्रदीप आर्य प्रधान

आपके सुझाव

आर्य सन्देश हेतु क्या आपके पास कोई ऐसा सुझाव व विचार है जिससे आर्य सन्देश को और अधिक लोकप्रिय बनाया जा सके? यदि हां तो आज ही अपने विचार व सुझाव हमें ई-मेल करें, हमारा पता है - **aryasandeshdelhi@gmail.com**

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-2 द्वारा श्रावणी पर्व 12 से 16 अगस्त को

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-2, नई दिल्ली दिनांक 12 से 16 अगस्त के मध्य श्रावणी पर्व मना रही है जिसमें ऋग्वेद शतकम् महायज्ञ, भक्ति संगीत, वेद कथा आदि का आयोजन किया जाएगा। आप सभी महानुभाव सपरिवार, इष्ट मित्रो सहित आमंत्रित हैं।

निवेदकः सहदेव नांगिया, प्रधान मो. 09899872726

आर्य समाज नोएडा, वेद गोष्ठी

आर्ष गुरुकुल बी-69 सै.33 नोएडा एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 21.22 व 23 अगस्त 2015 श्रावणी पर्व पर वेद-गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान सर्वश्री डॉ. वेद पाल, डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार डॉ. राजकिशोर शास्त्री भाग ले रहे हैं। माननीय योगानन्द शास्त्री एवं स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता होंगे।

-आर्य कै. अशोक गुलाटी, मो. 09871798221

आर्य समाज, बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी द्वारा स्वास्थ्य जांच शिविर सम्पन्न

आर्य समाज, बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी द्वारा मानवता को समर्पित स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन श्री वेद प्रकाश जी के नेतृत्व में किया गया। शिविर का उद्घाटन क्षेत्रीय सांसद श्री प्रवेश वर्मा के कर कमलों द्वारा किया गया। स्वास्थ्य शिविर में समाज सेवी संगठन महावीर इण्टरनेशनल नई दिल्ली एवं लायन्स क्लब, नई दिल्ली (दक्षिण) व आकांक्षा क्लब का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री शक्ति कुमार अग्रवाल ने की। जांच शिविर में आर्य केन्द्रीय सभा के उपप्रधान श्री विक्रम नरूला, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री शिव कुमार मदान, श्री रमेश जी, आर्य समाज विकासपुरी के प्रधान श्री हरीश कालरा, महामंत्री श्री बलदेव सचदेवा, कोषाध्यक्ष श्री ओ. पी. घई इत्यादि ने स्वामी दयानन्द जी के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर कार्य करने व समाज के अंतिम छोर पर खड़े कमजोर व्यक्ति तक पहुंचने के इस सार्थक प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

शोक समाचार — श्रीमती चंद्रकला का निधन

आर्य समाज मंदिर किदवई नगर(पूर्वी) नई दिल्ली के कार्यकारिणी सदस्य श्री राम कुमार जी की धर्म पत्नी श्रीमती चंद्रकला जी का दिनांक 20 जुलाई को निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

आवश्यकता है

आर्य समाज त्रिनगर, दिल्ली, द्वारा संचालित आयुर्वेदिक व होम्योपैथिक डिस्पैन्सरी के लिए योग्य डॉक्टर की आवश्यकता है। इच्छुक डॉक्टर सम्पर्क करें- **कालरा जी, मो. 08373954416**

पुरोहित चाहिए

सुयोग्य एवं विद्वान पुरोहित एवं आचार्य की आवश्यकता है जो रानी बाग आर्य समाज में पुरोहित के साथ-साथ चल रहे गुरुकुल के बालकों की देखभाल का दायित्व भी निभा सके।

-जोगेन्द्र खट्टर, प्रधान मो. 09810040982

चुनाव समाचार

आर्य समाज मानसरोवर पार्क, शाहदरा, दिल्ली-32

प्रधान - **श्री जगदीश प्रसाद शर्मा**
मंत्री - **श्री संदीप कुमार उपाध्याय**
कोषाध्यक्ष - **श्री फूल चन्द आर्य**

आर्य समाज मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली -15

प्रधान - **श्री अशोक कुमार गुप्ता**
मंत्री - **श्री गोपाल स्वरूप सरीन**
कोषाध्यक्ष - **श्री आत्म प्रकाश छाबड़ा**

अवश्यकता है

आर्य समाज केशवपुरम को एक सेवक की आवश्यकता है

सम्पर्क करें - मनबीर सिंह, मंत्री, मो. 09971823677

साप्ताहिक आर्य सन्देश

27 जुलाई से 2 अगस्त, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 30 जुलाई/31 जुलाई, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 जुलाई, 2015

आर्यसमाज की मिसकॉल सेवा आरम्भ 9211990990

अपने मोबाइल से मिस कॉल दें और पाएं नि:शुल्क जानकारी

एस.एम.एस. से जानकारी चाहने वाले सज्जन इस नम्बर पर मिसकॉल करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज के प्रचार हेतु मिसकॉल सेवा आरम्भ की गई। आप इस सेवा का लाभ उठाएं। यदि आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा आर्यसमाज से संबंधित किसी भी प्रकार की कोई जानकारी-सूचना प्राप्त करना चाहते हो तो 09211990990 पर मिसकॉल करें। आपके द्वारा कॉल करते ही कॉल कट जाएगी और आपको **धन्यवाद** संदेश प्राप्त होगा तथा आपका मो. नं. एस.एम.एस. सूची में अंकित हो जाएगा। **-महामंत्री**

प्रतिष्ठा में,

घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ योजना अन्तर्गत यज्ञकर्ता हेतु

विशेष सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की घर-घर यज्ञ,हर घर यज्ञ योजना को प्रारम्भ करते समय समाज के विभिन्न आर्यजनों ने एक वर्ष में 12 नये परिवारों को समाज से जोड़ने का संकल्प लिया था। अभी इस योजना को क्रियांवित हुए मात्र 4 महीने ही व्यतीत हुए हैं। इन चार महीनों में जिन-जिन महानुभावों ने इस योजना में अपनी सक्रियता निभाई है, कृपया वे अपनी प्रगति रिपोर्ट अर्थात् उन्होंने कितने और कहां-कहां के परिवारों को समाज के साथ जोड़ा। उनका विवरण एक कागज पर स्पष्ट लिखकर सभा कार्यलय को प्रेषित करें या सभा की ई-मेल **aryasabha@yahoo.com** पर मेल करें।

आवश्यकता है

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, शुद्धि सभा भवन, 6949, बिरला लाइन्स, सब्जी मंडी, दिल्ली -110007 को पार्ट टाईम व्यक्ति की आवश्यकता है जो प्रात: 10 से 1 बजे के मध्य सभा के कार्यालय में बैठकर कार्यालय के टेलीफोन तथा डाक आदि को देख सके। व्यक्ति आर्य समाज से जुड़ा हो व वह कमला नगर, शक्ति नगर, रूप नगर क्षेत्र का रहने वाला हो। सेवा की दृष्टि से कार्य करने के इच्छुक (आर्थिक दृष्टि से नहीं) व्यक्ति सम्पर्क करें। अच्छा हो कोई सरकारी सेवानिवृत्त महानुभाव सम्पर्क करें-

श्री हरबंस लाल कोहली (प्रधान)
दूरभाष : 23847244

नि:शुल्क सेवा उपलब्ध

वैदिक विदूषी आचार्या सुनीता शास्त्री जी (रेवाड़ी-हरियाणा) की वैदिक प्रवचनों/भजनों के लिए नि:शुल्क सेवा उपलब्ध है। आर्यसमाजें उन्हें आमंत्रित करने के लिए सम्पर्क करें।

-मो. 09416371926

अन्तर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं का आयोजन

मंत्रोचारण प्रतियोगिता	04/08/2015 (मंगलवार)	आर्य वैदिक पाठशाला आर्य समाज, प्रीत विहार, दिल्ली-110092
आशुभाषण प्रतियोगिता	12/08/2015 (बुधवार)	दयानन्द आदर्श विद्यालय आर्य समाज, तिलक नगर, दिल्ली
भाषण प्रतियोगिता	18/08/2015 (मंगवार)	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल आर्य समाज सरोजिनी नगर दिल्ली
नुक्कड़ नाटक	27/08/2015 (वीरवार)	लालीबाई बाल विद्यालय आर्य समाज, गोविन्द भवन, दयानन्द वाटिका राम बाग, नई दिल्ली-110007

सभी आर्य विद्यालयों के अधिकारियों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह